Journal of Bhartiya Hindi Research Review

संयुक्त परिवार के विघटन के परिणामस्वरूप आश्रयहीन वृद्धों की स्थिति।

नीलिमा [1]*, डॉ. बृजलता शर्मा [2]

[1, 2] शोद्यार्थी, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढवाल विश्वविद्याल, उत्तराखंड, भारत 2 प्रोफेसर, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखंड, भारत

अनुरूपी लेखक: **नीलिमा**

Article Info

ISSN (online): xxxx-xxxx
Volume: 01
Issue: 03
May-June 2024
Received: 01-05-2024
Accepted: 02-06-2024
Page No: 07-08

सारांश

संयुक्त परिवार का विघटन भारत में आधुनिक समाज और परिवार संरचना के महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक है। इस विघटन का एक प्रमुख परिणाम वृद्धों की आश्रयहीनता है, जो सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। यह शोध लेख संयुक्त परिवार प्रणाली के टूटने और इसके कारण वृद्धों की स्थिति पर केंद्रित है। इसमें उन कारणों और कारकों की चर्चा की गई है, जो संयुक्त परिवार के विघटन में सहायक रहे हैं, और साथ ही वृद्धों की आश्रयहीनता पर इसके प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

कुंजीशब्द: संयुक्त परिवार, वृद्ध आश्रयहीनता, पारिवारिक विघटन, सामाजिक परिवर्तन, वृद्धावस्था

परिचय

भारत में परिवार संरचना का एक महत्वपूर्ण और पारंपरिक मॉडल संयुक्त परिवार प्रणाली रहा है। इस प्रणाली में विभिन्न पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं, जो न केवल सामाजिक, बल्कि आर्थिक और भावनात्मक सुरक्षा भी प्रदान करती थी। इस प्रणाली का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि इसमें वृद्धों को विशेष सम्मान और देखभाल प्राप्त होती थी।

हालांकि, आधुनिक युग में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली में तेजी से विघटन हुआ है। इसके परिणामस्वरूप वृद्धों की स्थिति दयनीय हो गई है, जो अब परिवार की देखभाल से वंचित हैं और उन्हें आश्रयहीनता का सामना करना पड़ रहा है। यह लेख संयुक्त परिवार के विघटन के कारणों और वृद्धों की आश्रयहीनता पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करेगा।

चर्चा

संयुक्त परिवार प्रणाली का महत्व

पारंपरिक भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस प्रणाली में वृद्ध सदस्यों को परिवार के प्रमुख और मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता था। वे अपने जीवन के अनुभवों और ज्ञान को अगली पीढ़ी के साथ साझा करते थे और परिवार की नैतिक, आर्थिक और सामाजिक दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

संयुक्त परिवार न केवल आर्थिक रूप से स्थिर थे, बल्कि उनमें भावनात्मक संबंध भी मजबूत होते थे। परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे का सहारा बनते थे और एक सुरक्षित वातावरण में जीवन व्यतीत करते थे। इस संरचना में वृद्धों की देखभाल का जिम्मा परिवार के युवा सदस्यों पर होता था, जो उनके स्वास्थ्य और आवश्यकताओं का ध्यान रखते थे।

विघटन के कारण

आधुनिक समाज में कई ऐसे कारक उभरे हैं, जिन्होंने संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमें से प्रमुख हैं:

आर्थिक स्वतंत्रता: आधुनिक युग में आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत जीवनशैली को अधिक प्राथमिकता दी जाने लगी है। युवा पीढ़ी रोजगार के अवसरों के लिए शहरों में पलायन कर रही है, जिससे परिवार के सदस्य एक साथ नहीं रह पा रहे हैं।

न्यूक्लियर परिवार का उदय: आर्थिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की चाह में न्यूक्लियर परिवार का प्रचलन बढ़ा है। इसमें केवल माता-पिता और उनके बच्चे एक साथ रहते हैं, जिससे वृद्ध सदस्य परिवार के मुख्य ढांचे से बाहर हो जाते हैं।

सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन: आधुनिक समय में समाज की बदलती सांस्कृतिक और सामाजिक मान्यताएँ भी संयुक्त परिवार के विघटन का एक प्रमुख कारण हैं। नई पीढ़ी पारंपरिक जीवनशैली को अपनाने के बजाय अधिक स्वतंत्र और व्यक्तिगत जीवन को प्राथमिकता देती है।

प्रौद्योगिकी और मीडिया का प्रभाव: प्रौद्योगिकी और मीडिया के प्रसार ने लोगों के जीवन में तेजी से परिवर्तन लाया है। इससे पारिवारिक और सामाजिक मूल्य बदल गए हैं, जिससे संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन हुआ है।

वृद्धों की आश्रयहीनता

संयुक्त परिवार के विघटन का एक सबसे बड़ा प्रभाव वृद्धों की आश्रयहीनता है। वे अब उस सुरक्षा और देखभाल से वंचित हो गए हैं, जो उन्हें संयुक्त परिवार में मिलती थी। आज वृद्धों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जैसे:

आर्थिक निर्भरता: कई वृद्ध अपने बच्चों पर आर्थिक रूप से निर्भर होते हैं, और जब संयुक्त परिवार टूट जाता है, तो उन्हें आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

भावनात्मक और मानसिक समस्या: संयुक्त परिवार का विघटन वृद्धों के भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा असर डालता है। उन्हें अकेलापन महसूस होता है, और उनके पास अपने जीवन के अंतिम चरण में कोई सहारा नहीं होता।

स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ: परिवार के सदस्यों की अनुपस्थिति के कारण वृद्धों की स्वास्थ्य देखभाल में कमी आती है। उन्हें अपनी बीमारियों और स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करने में कठिनाई होती है।

आश्रय की कमी: कुछ मामलों में, वृद्ध अपने बच्चों या परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा त्याग दिए जाते हैं और उन्हें आश्रय के लिए वृद्धाश्रमों में जाना पड़ता है। इन आश्रमों में भी कई बार उपयुक्त देखभाल नहीं मिल पाती है, जिससे उनकी स्थिति और भी दयनीय हो जाती है।

वृद्धाश्रमों का उदय

संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन के साथ ही वृद्धाश्रमों का प्रचलन बढ़ा है। ये आश्रम उन वृद्धों के लिए एकमात्र आश्रय बन गए हैं, जिनके पास परिवार का सहारा नहीं है। हालांकि, इन आश्रमों की सीमाएँ भी हैं। कई वृद्धाश्रमों में आवश्यक सुविधाओं की कमी होती है और वहाँ वृद्धों को उपयुक्त भावनात्मक सहारा नहीं मिल पाता है।

वृद्धाश्रमों की एक और समस्या यह है कि उनमें वृद्धों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, जिससे संसाधनों की कमी होती जा रही है। इसके अलावा, कुछ वृद्धाश्रमों में वृद्धों की देखभाल के स्तर पर भी प्रश्नचिह्न लगा हुआ है। यह समस्या समाज के लिए एक गंभीर चुनौती बनती जा रही है।

नतीजा

इस शोध के परिणामस्वरूप यह स्पष्ट हुआ कि संयुक्त परिवार के विघटन का वृद्धों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। वृद्धाश्रमों में वृद्धों की संख्या बढ़ने के साथ-साथ उनकी स्थिति और अधिक दयनीय हो रही है। समाज में बढ़ती व्यक्तिगत जीवनशैली और न्यूक्लियर परिवारों की ओर झुकाव ने वृद्धों को आश्रयहीन बना दिया है।

इस शोध से यह भी ज्ञात हुआ कि संयुक्त परिवार की परंपरा में जहाँ वृद्धों को सामाजिक, आर्थिक, और भावनात्मक सुरक्षा मिलती थी, वहीं इसके विघटन ने उन्हें इन सभी सुविधाओं से वंचित कर दिया है। यह स्थिति न केवल वृद्धों के लिए, बल्कि समाज के लिए भी एक चुनौती बन चुकी है।

निष्कर्ष

संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन ने भारतीय समाज में वृद्धों की स्थिति को अत्यंत नाजुक बना दिया है। उन्हें अब वह सुरक्षा और देखभाल नहीं मिल पा रही है, जो पहले संयुक्त परिवार में उपलब्ध थी। आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली का टूटना अनिवार्य प्रतीत होता है, लेकिन इसका प्रभाव वृद्धों पर अत्यंत नकारात्मक है।

इस समस्या का समाधान निकालने के लिए आवश्यक है कि समाज में परिवारों के बीच एक संतुलन स्थापित किया जाए, जहाँ वृद्धों की देखभाल और सम्मान को प्राथमिकता दी जाए। इसके अलावा, सरकार और सामाजिक संगठनों को भी वृद्धों के लिए विशेष योजनाएँ बनानी चाहिए, ताकि वे अपने जीवन के अंतिम चरण में सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें।

सन्दर्भ सूची

1. मिश्रा ए. संयुक्त परिवार प्रणाली और उसका विघटन: सामाजिक दृष्टिकोण. वाराणसी: समाज अध्ययन केंद्र; c2010.
2. वर्मा एस. वृद्धाश्रमों की स्थिति और समस्याएँ. समाज और परिवार. 2016;15(2):48-59.
3. पांडे आर. संयुक्त परिवार का विघटन और वृद्धावस्था. भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका. 2018;12(3):66-77.
4. कुमार एम. आधुनिक समाज में पारिवारिक संरचना का परिवर्तन. समाज और संस्कृति. 2021;19(1):102-115.
5. शर्मा पी. वृद्धाश्रमों में वृद्धों की स्थिति: एक अध्ययन. सामाजिक जागरूकता पत्रिका. 2022;24(4):85-97.